International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 5.401 Volume 5, Issue 3, March 2018
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

कृदन्त में कृत्यप्रक्रिया का विवेचनात्मक अध्ययन

डॉ० भवानीशंकर शर्मा 'महाजनीय'

सामान्यतः यह प्रश्न उठता ही रहता है कि**कृत्-प्रत्यय किसे कहते हैं?** सही-सही पहिचान नहीं होने के कारण इस प्रकार की जिज्ञासा प्रायः व्याकरण में प्रवेशार्थी को होती रहती है ।**कृत्** ही क्यों किसी भी नए प्रत्यय या विषय पर जिज्ञासा होना स्वाभाविक है, अतः विना विलम्ब किए यह जान ही लेना चाहिए कि **धातु** के अन्त में जिसे जोड़कर (**धातोः**) सञ्ज्ञा व विशेषण आदि शब्द बनाये जाते हैं ,उस प्रत्यय को**कृत्** कहते हैं। कहा भी है—**कर्तरिकृत्**—धातुओं से कर्त्रर्थ में **कृत्**-प्रत्यय होते हैं। ये **तिङ्**-प्रत्ययों से भिन्न होते हैं (**कृदतिङ्**), क्योंकि **तिङ्** भी धातुओं से परे ही होते हैं।

फिर **कृदन्त** और **कृत्** में क्या अन्तर है?

अजी, **कृत्** तो प्रत्यय हैं, जबकि धातु के अन्त में **कृत्**-प्रत्यय जोड़ने से जो प्रातिपदिकबनते हैं,उन्हें **कृदन्त** कहते हैं। यही दोनों में भेद हैं, सामान्य व्यक्ति को ये दोनों एक जैसे प्रतीत होते हैं ।**कृदन्त** के दो प्रकार हैं—१.**पूर्वकृदन्त** और २.**उत्तरकृदन्त**।

कृत्य प्रत्ययों को छोड़ पूर्वकृदन्त के प्रत्यय प्रायः **कर्त्ता** के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं (**कर्तरिकृत्**) औरउत्तरकृदन्त के प्रत्यय प्रायः **भाव** तथा **कर्त्ता**कारक के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। हमने ऐसा ही और शब्द सुना है, वह है —**कृत्य**, क्या यह भी प्रत्ययों का नाम है या **कृत्या**कृदन्त को ही **कृत्य** कहते हैं?

कृदन्त को **कृत्य** नहीं कहा जाता है, किन्तु **कृत्** प्रत्ययों में से ही कुछ ये कुछ ऐसे **प्रत्यय** हैं,जो **कर्त्ता** अर्थ में न होकर **भाव** और **कर्म** के अर्थ में होते हैं, उन्हें **कृत्य**-प्रत्ययकहा जाता है। **कृत्य** किन अर्थों में होंगे, इसके लिए पाणिनि ने कहा है—**तयोरेवकृत्यक्त-खलर्थाः**—**कृत्य**-प्रत्यय,क्त-प्रत्यय और **खलर्थ** प्रत्यय भाव और कर्म में होते हैं। ऐसे प्रत्ययों का विधान **"ण्वुल्तृचौ"** सूत्र से पूर्व में आए सूत्रों द्वारा किया गया है(**कृत्याः**)।

सरूप कृत्य—कृत्यों में से कौन-कौन से प्रत्यय **सरूप**होते हैं अर्थात् **सरूप** की दृष्टि से कृत्यों के कितने वर्ग बनाए जा सकते हैं? **सरूप** का विचार करने पर इन प्रत्ययों के चार वर्ग बनते हैं —**१.तव्य-शेष**—तव्यत्,तव्य **२.अनीय-शेष**—अनीयर्**३.य-शेष**—यत्,क्यप्,ण्यत् **४.एलिम-शेष—**केलिमर्। **कृत्य**-प्रत्ययान्त शब्दों के रूप सञ्ज्ञा-पदों की तरह तीनों लिंगों में चला करते हैं ।पुँल्लिङ्गमें **कृष्ण** की तरह, स्त्रीलिङ्ग में **लता** के समान और नपुंसक-लिङ्ग में **फल** के तुल्य रूप चलते हैं।

अजी,यह **सरूप** और **विरूप** नामक भेद करने का प्रयोजन क्या है?

प्रायः सर्वत्र **अपवाद** सूत्र द्वारा **सामान्य** यानी **उत्सर्ग** सूत्र का बाध किया जाता है, किन्तु **वासऽरूपोऽस्त्रियाम्** द्वारा धातु के अधिकार में **असरूप** (असमान) प्रत्ययों के विषय में विकल्प से बाध किया जाता है । किन्तु जहाँ **सामान्य** सूत्र से विधान किए गये प्रत्यय और **अपवाद** सूत्र से विधान किए **सरूप** प्रत्ययों के विधान की बात हो, वहाँ तो नित्य बाध ही होगा। जैसे—**अण्** और **क** प्रत्ययों का **अ** ही शेष रहता है, इसलिए ये दोनों **सरूप** प्रत्यय हुए, अतः यहाँ **क** प्रत्यय **अण्** का नित्य बाधक होगा अर्थात् **अण्** की जगह **क** का ही विधान होगा। अर्थात् **कर्मण्यण्** सूत्रका **आतोनुपसर्गे कः** सूत्र नित्य बाधक सूत्र है।**अण्** को **णित्** और **क** को **कित्** करने के भी अलग-अलग प्रयोजन हैं।

आपके अनुसार **कृत्य** प्रत्यय **कृत्** ही हैं, कर्त्ता के अर्थ में न होने से उन्हें कृत्य कहकर पृथक् नाम दे दिया गया है ।किन्तु **कृत्** और **तिङ्** प्रत्ययों में क्या भेद है?

कृदन्त शब्द नित्य सञ्ज्ञा, विशेषण या अव्यय होते हैं; ये कभी भी क्रियापद नहीं हो सकते; जबकि **तिङ्**-प्रत्ययान्ततो नित्य **क्रियापद** बनते हैं।बस,दोनों मेंयही अन्तर है।

हम वाक्यों में कृदन्तों का प्रयोग क्यों करें, सामान्य शब्दों का प्रयोग ही कर लें, हमारा व्यवहार तो उनसे चल ही जाता है? हाँ, यह अच्छा प्रश्न है, देखिए; संस्कृत में शब्द-लाघव के लिए ये प्रत्यय बहुत ही उपयोगी हैं और अंग्रेजीया हिन्दी आदि में जिस भाव को व्यक्त करने के लिए कई शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है ,वह **भाव** संस्कृत में मात्र

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

एकशब्द (कृदन्त) से ही व्यक्त किया जा सकता है। जैसे—वह मार डाला जाना चाहिए— **हन्तव्य**:। **कृत्य**-प्रत्ययों द्वारा यह बोध होता है कि धातु द्वारा व्यक्त कार्य अवश्य सम्पादित होना चाहिए। जैसे— **वक्तव्यम्—वचनीयम्—वाच्यम्** (कहा जाना चाहिए)। इस प्रकार उक्त प्रत्ययों द्वारा व्यक्त भाव योग्यता ,चाहिए अथवा आवश्यकताको ध्वनित करते हैं। जैसे—मुझे वहाँ होना चाहिए—**मया तत्र स्थातव्यम्**;उसे करना मेरा कर्तव्य है—**मया तत् कर्तव्यम्**।

कृत्य-प्रक्रियास्थ सूत्रों का भाव व उदाहरण—

धातोः॥३.१.९१ (अधिकार-सूत्रम्)
यहाँ से लेकर अष्टाध्यायी के तीसरे अध्याय के अन्त तक जो-जो प्रत्यय होंगे, वे धातुओं से परे हों । आ तृतीयाध्याय-समाप्तेर्प्रत्ययास्ते धातो: परे स्यु:। इन सभी प्रत्ययों की**कृत्**-संज्ञा हो—कृदतिङ्।

वासऽरूपोऽस्त्रियाम्॥३.१.९४ (परिभाषा-सूत्रम्)
धातो: सूत्र के अधिकार में असरूप अपवाद प्रत्यय उत्सर्ग का विकल्प से बाधक हो, 'स्त्रियाम्' इस अधिकार को छोड़कर—अस्मिन् धात्वधिकारेऽसरूपोऽपवादप्रत्यय उत्सर्गस्य बाधको वा स्यात्, स्त्र्यधिकारोक्तं विना

कृत्याः॥३.१.९५ (अधिकार-सूत्रम्)
'ण्वुल्तृचौ' सूत्र से पूर्व तक होने प्रत्ययों की कृत्य संज्ञा हो—ण्वुल्तृचाविति्यतः प्राक् कृत्य-सज्ञाः स्युः।

कर्तरि कृत्॥ ३.४.६७ (विधि-सूत्रम्)
कृत्प्रत्यय धातुओं से कर्त्ता के अर्थ में होते हैं—कृत्प्रत्ययः कर्तरि स्यात्।

तव्यत् ⇨ तव्य, तव्य ⇨ तव्य, अनीयर् ⇨ अनीय—

तव्यत्तव्यानीयरः॥३.१.९६ (विधि-सूत्रम्)
व्याख्या—धातुओं से **तव्य**,**तव्यत्** और **अनीयर्** प्रत्यय **चाहिए**(भाव व कर्म के) अर्थ में होते हैं। **तव्यत्** और **अनीयर्** के**तकार**व**रेफ** का लोप हो जाने से**तव्य** और **अनीय** शेष रहते हैं।

अकर्मक-धातुओं से ये प्रत्यय भाव अर्थ में होते हैं। भावार्थ में इनका प्रयोग **नपुंसक-लिङ्ग** एकवचन में होता है और इनके **कर्ता** का प्रयोग **तृतीया** विभक्ति में होता है। जैसे— **एधितव्यम् एधनीयं वात्वया॥** इस उदाहरण में **एध्** अकर्मकधातु है। इसलिये यहाँ **भाव** अर्थ में **तव्यत्** और **अनीयर्** प्रत्यय हुए हैं। **भाव** अर्थ में होने से इनका प्रयोग नपुंसकलिङ्ग के एकवचन में हुआ है और इनका**कर्ता** तृतीया विभक्ति में**त्वया** हो गया है।

सकर्मकधातुओं से ये प्रत्यय **कर्म** अर्थ में होते हैं। **कर्म** जिस लिङ्ग,विभक्ति व वचन का होता है,उसी में इन प्रत्ययों से बने शब्दों का प्रयोग किया जाता है। **कर्ता** का तृतीया और **कर्म** का प्रथमा में प्रयोग होता है। यथा—**चेतव्यः चयनीयो वा धर्मस्त्वया॥** इस वाक्य में **चि** धातु सकर्मकहै। इसलिये यहाँ **तव्यत्** और **अनीयर्** प्रत्यय कर्म में हुए हैं। इनका कर्म—**धर्म** प्रथमा विभक्ति के एकवचन में ही है। पुँल्लिङ्ग में **चेतव्यः चयनीयः**। स्त्रीलिङ्ग में **चेतव्या**,**चयनीया॥** नपुंसकलिङ्ग में **चेतव्यम्**,**चयनीयम्** होता है। यथा—

चेतव्यं चयनीयं पुष्पम्॥ चेतव्याचयनीयावालता॥ चेतव्यः चयनीयोवाधर्मः।

कभी-कभी **कृत्य** प्रत्यय से बने हुए शब्द केवल **भविष्यत्काल** के ही द्योतकहोते हैं। जैसे— **युवयोः पक्षबलेन मयापि सुखेनगन्तव्यम्** (हितोपदेश)। कभी-कभी इन प्रत्ययों का प्रयोग भविष्यत् काल के अर्थ में निश्चय-द्योतकके लिए होता है। जैसे—**लुब्धकेन मृगमांसार्थिना गन्तव्यम्**(हितोपदेश)। **ततः केनापि शब्दः कर्तव्यः**(हितोपदेश)। **भवितव्यम्** और **भाव्यम्** रूपों का स्वतन्त्र प्रयोग विशेष ध्यातव्य है। इनका प्रयोग—**अवश्य होना चाहिए** या **जहाँ तकसम्भव है**,अर्थों में होता है। ये **अनिश्चय** के बोधकहैं। दोनों दशाओं में होना के पूर्ववर्ती सञ्ज्ञा-सर्वनाम-विशेषण-पद को साधारण विशेषण की भाँति ही कर्ता का समानाधिकरण होना चाहिए। जैसे—**स्वेषु स्वेषुपाठेष्वसम्मूढैर्भवितव्यम्**(युष्माभिः)(विक्रमोर्वशीयम्)। **अस्य शब्दानुरूपेण पराक्रमेण भाव्यम् भवितव्यं वा**(पञ्चतन्त्र,१.१)। इन प्रत्ययों से बने शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं। यथा—

गम्+तव्यत्>गम्+तव्य सुँ**=गन्तव्यः**,**गन्तव्या**,**गन्तव्यम्**
गम्+अनीयर्>गम्+अनीय सुँ**=गमनीयः**,**गमनीया**,**गमनीयम्**

तव्यत् में **तव्य** और अनीयर् में से **अनीय** शेष रहता है। धातुओं के अन्त में यदि **स्वर** (इ, उ, ऋ)होतो**तव्यत्**तथा**अनीयर्** प्रत्ययलगनेपर स्वरकोगुणहोजाताहै।यथा—

नी+तव्यत्>ने+तव्य **>** नेतव्य सुँ**=नेतव्यः**
नी+अनीयर्>ने+अनीय **>** नय्+अनीय**>** नयनीय सुँ**=नयनीयः**

यदि धातु **सेट्** है, तोधातु और प्रत्यय के बीच में**इ (इट्)** लग जाता है। जैसे—

एध्+तव्यत्>एध्+**इ(इट्)**+तव्य> एधितव्य सुँ**=एधितव्यः**।

तव्यत् आदि से बने पदों के रूप कर्म के अर्थ में होंगे, तो उसके लिंग को ही धारण कर लेंगे

केलिमर् ⇨ एलिम

वा० **केलिमर उपसंख्यानम्॥**(विधि-सूत्रम्)

व्याख्या—केलिमर्-प्रत्यय भी सकर्मक धातुओं से कर्म के अर्थ में और अकर्मक धातुओं से भाव के अर्थ में होता है । **केलिमर्** के **क**कारकी **लशक्वतद्धिते** से और **रेफ** की **हलन्त्यम्** सूत्र से **इत्** सञ्ज्ञा व**तस्य लोपः** से लोप होकर **एलिम** शेष रहता है। **जैसे—पचेलिमा माषाः**।

पच्+ **केलिमर्** >पच्+ **एलिम** >पचेलिम **जस्** **= पचेलिमाः** (माषाः)

भिद्+ **केलिमर्** >भिद्+ **एलिम** >भिदेलिम **जस्** **= भिदेलिमाः** (सरलाः)

कृत्यल्युटो बहुलम्॥३.३.११३(विधि-सूत्रम्)

व्याख्या—कृत्य और ल्युट् प्रत्यय बहुलता से होते हैं। **बहुलता** चार प्रकार की होती है।

१.कहीं प्रवृत्ति(प्राप्ति न होने पर भी प्रवृत्त) होना।

२.कहीं अप्रवृत्ति (प्राप्ति होने पर भी प्रवृत्त न) होना।

३.कहीं विकल्प से प्रवृत्त होना।

४.कहीं किसी अन्य प्रकार से प्रवृत्त होना।

स्थानीयं चूर्णम्। **दानीयो विप्रः**। इन प्रयोगों में **अनीयर्** प्रत्यय क्रमशः **करण**और **सम्प्रदान**अर्थ में प्राप्त नहीं है ,फिर भी **बहुलम्**के आधार पर "**स्नाति अनेन इति स्नानीयं चूर्णम् "** प्रयोग में **अनीयर्** प्रत्यय **करण** अर्थ में तथा "**दीयते अस्मै दानीयो विप्रः"**प्रयोग में **अनीयर्**प्रत्यय **सम्प्रदान** अर्थ में प्राप्त है।

स्ना+अनीयर्> स्ना+अनीय> स्नानीयसुँ—अम् **= स्नानीयम्**

यत् ⇨**य** (अर्थ⇨चाहिए, रूप⇨तीनों लिङ्गों में)

अचो यत्॥३.१.९७(विधि-सूत्रम्)

व्याख्या—अजन्त (स्वर है अन्त में जिसके ऐसी) धातु से **यत्** प्रत्यय भाव व कर्म (चाहिए)अर्थ में होता है। **यत्** प्रत्यय के योग में धातु के अन्तिम स्वर का **गुण** हो जाता है। जैसे— **चि + यत्** में **इ**कार को गुण हो जाने से **चेय**,**चेया**,**चेयम्** रूप सिद्ध होते हैं।

ईद्यति॥६.४.६५(विधि-सूत्रम्)

व्याख्या—यदिधातुके अन्तमें**आ**होताहै, तोउसकेस्थानमें**ई**आदेशहोता है, फिर**गुण**होजाताहै।जैसे—**दा+ यत्> दी** + य> **दे** +य>**देय**सुँ **= देयः**,**देयम्**(सुँ—अम्), **देया**(टाप्)।शेष नियम **तव्यत्** और **अनीयर्** प्रत्यय के समान होते हैं।

पोरदुपधात्॥३.१.९८(विधि-सूत्रम्)

व्याख्या—जिस धातु के अन्त में **पवर्ग** का कोई वर्ण हो और उसकी उपधा में कोई **अकार** हो, तोउससे **यत्** प्रत्यय होता है। उदाहरण—

शप्+यत्>शप्+य>शप्यसुँ—अम्**=शप्यम्**

लभ्+ यत्>लभ्+य>लभ्यसुँ—अम्**= लभ्यम्**

जप् + यत् > जप् + य > जप्य सुँ—अम्**=जप्यम्**

क्यप् ⇨ य

एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप्॥३.१.१०९(विधि-सूत्रम्)

व्याख्या—इण्,स्तु,शास्, वृ,दृ और जुष् धातुओं से भाव और कर्म में **क्यप्** प्रत्यय होता है। इसके **क्** और **प्** का लोप हो जाता है शेष **य** बचता है। **प्** का लोप हो जाने से यह **पित्** कृत् प्रत्यय कहलाता है। पित् **कृत्** प्रत्यय परे होने पर **ह्रस्वस्वर** को **तुँक्** का आगम होता है। **तुँक्** में **क**कार और **उँ**कार का लोप हो जाता है। शेष **त्** बचता है।

ह्रस्वस्य पिति कृति तुँक्॥६.४.३४(विधि-सूत्रम्)

व्याख्या—पित् **कृत्** प्रत्यय परे होने पर **ह्रस्वस्वर** को **तुँक्** का आगम होता है।

इण्+क्यप् > इ**तुँक्**य>**इत्**य>इत्य सुँ **=इत्यः**

स्तु+क्यप् > स्तु **तुँक्**य> स्तु**त्**य>स्तुत्य सुँ **=स्तुत्यः**

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

शासइदङ्हलोः॥६.१.७१(विधि-सूत्रम्)
इसमें **क्यप्** प्रत्यय होने से उपधा के **आ**के स्थान पर **इ**होता है, **शास्** धातु के उपधा **आ** को **इ**कार (शिस्) हो जाता है। **शास्** धातु से **क्यप्** प्रत्यय हो। उदाहरण—

शास्+क्यप् **>** **शिस्**+य>शिष्य**>शिष्य** सुँ **=शिष्य**:
वृ+ तुँक् + क्यप् **>** वृ त् य **>** वृत्य **>** वृत्य सुँ **=वृत्य**:
आदृ+तुँक्+क्यप् **>** आदृ त् य **>** आदृत्य **>** आदृत्य सुँ **=आदृत्य**:
जुष्+क्यप् **>** जुष्+ य **>** जुष्य **>** जुष्य सुँ **=जुष्य**:

क्लृप् और **वृत्** को छोडक़र **ऋ** उपधा वाली धातुओं से भी **क्यप्** प्रत्यय होता है। जैसे—

वृध्+क्यप् **>** वृध्+ य **>**वृध्य सुँ—अम् **=वृध्यम्**

मृजेर्विभाषा॥३.१.११३(विधि-सूत्रम्)
व्याख्या—मृज्,भृ,कृ धातुओं से विकल्प से **क्यप्** प्रत्यय होता है। यथा—

मृज् + क्यप् > मृज् + य>मृज्य सुँ **=मृज्य**:
भृ + क्यप् **>** भृ + तुँक् + य>भृत्यसुँ **=भृत्य**: (तुँगागम)
कृ + क्यप् **>** कृ + तुँक् +य>कृत्यसुँ—अम् **=कृत्यम्** (तुँगागम)
वृष् + क्यप् **>** वृष् + य>वृष्य सुँ—अम् **=वृष्यम्**

ण्यत् ⇨ य

ऋहलोर्ण्यत्॥३.१.१२४(विधि-सूत्रम्)
व्याख्या—जो धातु **ऋकारान्त** हो या कोई **हलन्त** हो तो,उससे भाव और कर्म में **ण्यत्** प्रत्यय होता है। **ण्यत्**के **ण**कार और **त**कार का **चुटू** और **हलन्त्यम्** सूत्रों से **इत्**-सञ्ज्ञा होकर **तस्यलोपः** से लोपहो जाता है , जिससे शेष **य**बचता है। जिस धातु के अन्त में यह प्रत्यय लगता है,उस धातु के **ऋ**कार को वृद्धि (**आर्**)**अचो ञ्णिति** से हो जाती है।

कृ+ण्यत् >कृ+य > कार् य सुँ-**अम् =कार्यम्**
हृ+ण्यत् > हृ+य > हार् य सुँ-**अम् = हार्यम्**

अदुपध हलन्त-धातुओं से जब **ण्यत्**होता है, तब उपधा को **वृद्धि** होती है। ऐसी हलन्त धातुओं से **ण्यत्**होने पर कैसे शब्दों का निर्माण होता है, आओ, उन्हें भी देख लें—

पठ् +ण्यत् > पठ् +य >पाठ् य सुँ-**अम् =पाठ्यम्**
हस् +ण्यत् > हस् +य >हास् य सुँ-**अम् =हास्यम्**

अब कुछ ऐसी धातुओं के उदाहरण प्रस्तुत हैं, जिनसे**ण्यत्**होने पर उपधा को **वृद्धि** नहीं, अपितु **गुण** होता है—

वृष् +ण्यत् > वर्ष् +य >वर्ष् य सुँ-**अम् =वर्ष्यम्**
कृष् +ण्यत् > कर्ष् +य >कर्ष् य सुँ-**अम् =कर्ष्यम्**
बुध् +ण्यत् > बोध् +य >बोध् य सुँ-**अम् =बोध्यम्**
युध् +ण्यत् > योध् +य >योध् य सुँ-**अम् =योध्यम्**

अब कुछ ऐसी धातुओं के उदाहरण प्रस्तुत हैं, जिनसे **ण्यत्**होने पर उपधा को **वृद्धि, कुत्व** आदि के नियम विकल्प से या भिन्न रूप से होते हैं —

त्यज् +ण्यत् > त्यज् +य >त्याज् य सुँ-**अम् =त्याज्यम्**
मृज् +ण्यत् > मार्ग् +य >मार्ग् य सुँ **=मार्ग्यः**

च् > क्, क् > ग् (आदेश)

चजोः कुघिण्यतोः॥७.३.५२ (विधि-सूत्रम्)
व्याख्या—घित् अथवा **ण्यत्** परे हो तो **च**कार और **ज**कार को क्रमशः **क**कार व **ग**कार हो।
यह आदेश **स्थानेऽन्तरतमः** सूत्र की सहायता से होता है। **मृज् + य = मृग् + य**—यह स्थिति होने पर—

मृजेर्वृद्धिः॥३.१.११४ (विधि-सूत्रम्)
व्याख्या—मृज्-धातुके **इक्** की वृद्धि होती है,सार्वधातुक या आर्धधातुक प्रत्यय परे हो, तो ।**इकोगुणवृद्धी** से **मृज्** के **ऋ**कार के स्थान पर ही **वृद्धि** (आर्) होती है। जैसे—
मृज् + ण्यत् > मार्ज् + य > मार्ग् (**चजोः कुघिण्यतोः** से **ज्** को **ग्**) + य सुँ **= मार्ग्यः**

भोज्यं भक्ष्ये॥७.३.६९ (विधि-सूत्रम्)

व्याख्या—भुज्-धातुके **भक्षण** अर्थ में होने पर ही **भोज्य** हो, यानी **चजो: कुघिण्यतो:** से प्राप्त **कुत्व** का निषेध होता है, अन्यत्र नहीं।

इकोगुणवृद्धी से **मृज्** के **ऋ**कार के स्थान पर ही **वृद्धि** (आर्) होती है। जैसे—

मृज् + ण्यत् > मार्ज् +य>मार्ग् य> मार्ग्य सुँ **= मार्ग्यः**

भुज् +ण्यत्> भोज्+ य> भोज्य सुँ-अम् **=भोज्यम्** (भक्षणार्थक)

भुज् +ण्यत्> भोग्+ य **>** भोग्य सुँ-अम् **=भोग्यम्** (भोगार्थक)

यह था कृदन्त में कृत्य-प्रक्रिया-प्रकरण, जिसे समझने और समझाने में प्रायः भूल होती रहती है । हमारे इस विवेचन से इस प्रक्रिया को समझकर उसके वास्तविक स्वरूप को सरलता से जाना जा सकता है

---***---***---

राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरू (राजस्थान)